

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II-- खण्ड 3--उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 19

नई दिल्ली, संभवार, जमवरी 15, 1973/पौष 25, 1894

No. 19]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 15, 1973/PAUSA 25, 1894

इस भाग हो भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप हाँ रखा जा स**ं** ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separte compilation

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

ORDER

New Delhi, the 15th January 1973

S.O. 22(E)/18AA/IDRA/73.—Whereas the Central Government is satisfied that the persons in charge of the industrial undertaking known as Shri Janki Sugar Mills and Company, Dolwala District Dehra Dun (Uttar Pradesh) (hereinafter in this referred to as the said industrial undertaking) have by creation of incumanches on the assets of the said industrial undertaking and by diversion of funds, rought about a situation which is likely to affect the production of sugar manufactured in the said industrial undertaking and that immediate action is necessary to prevent such a situation:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 18AA of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), inc Central Government hereby authorises the Uttar Pradesh State Sugar Corporation Limited, to take over the management of the whole of the said industrial undertaking.

This order shall have effect for a period of one year from the date of its publication in the Official Gazette.

lNo. F. 4/11/72-C.U.C.] D. K. SAXENA, Jt. Secv.

ग्रीशोगिक विकास मंत्रालय

आवेश

नई दिल्ली, 15 जनवरी, 1973

का० गा० 22 (भ)/18 ए० ए० /आई० डी० भार० ए०/73.—यतः केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि श्री जानकी शुगर मिल्स एण्ड कम्पनी, दोईब ला, जिला वेहरादून (उत्तर प्रदेश) (जिसे इस श्रादेश में इस के पश्चान उक्त घौद्योगिक उपक्रम वहा गया है) नामक श्रीद्योगिक उपक्रम के भार-साथक व्यव्तियों के, उक्त घौद्योगिक उपक्रम की श्रास्तियों पर विलेगमों का सूजन करके श्रीर निधियों के विषथन द्वारा ऐसी रिथति उत्पन्न कर दी है कि जिससे उक्त उपक्रम में विनिर्मित एकरा के उत्पादन पर प्रभाव पड़ने की संभावना है श्रीर ऐसी स्थिति से बचने के लिए इरन्त कार्रवाई करना श्रावध्यक है;

श्चतः, श्रव उद्योग (विकास भौर विनियम) श्रिधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18कक की उपधारा (1) द्वारा भदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, सम्पूर्ण प्रबन्ध भ्रहण करने के लिए एतद्द्वारा प्राधिकृत करती हैं।

यह आदेश राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से एक वर्ष की अवधि के लिए प्रभावी होगा।

[मं० फा० 4/11/72—सी० य्०सी०] डी० के० सक्सेना, संयक्त सन्दित्र ।